विद्या आश्रम कार्यकारिणी बैठक के लिए
22 फरवरी 2022
वर्ष 2021-22 के प्रमुख विचार बिंदु और कार्य

1. **पिछली कार्यकारिणी की बैठक के निर्णय :** विद्या आश्रम कार्यकारिणी की पिछली बैठक 25 अगस्त 2021 को हुई थी. इस बैठक में विद्या आश्रम के वर्ष 2021-22 का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया और सर्व सहमति से उस पर कार्य शुरू हुआ. दो प्रमुख कार्यक्रमों ने आकार लिया. पहला, लोकाविद्या जन आन्दोलन और दूसरा, नई ज्ञान की दुनिया में लोकपक्ष की पहल. लोकविद्या जन आन्दोलन के तहत किसान आन्दोलन से उठी जन चेतना को लोकविद्या दर्शन का आधार देते हुए लोकाविद्याधर समाज में फ़ैलाने के कार्यो को आकार दिया गया और लोकपक्ष की पहल के अंतर्गत विद्या आश्रम फेलोशिप्स की शुरुआत कर लोकविद्या सत्संग, ज्ञान पंचायत और समाजों की कहानी समाजों की ज़ुबानी कार्यक्रमों को आकार दिया गया.
2. **किसान आन्दोलन से निर्मित परिस्थितियां :** वाराणसी के सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ 29 अगस्त को विद्या आश्रम पर हुई बैठक में कार्यकारिणी में तय कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया. आम समझ यह बनी कि किसान आन्दोलन ने देश के समाजों को अपने ज्ञान के दावे के साथ जीने और एक न्यायपूर्ण समाज के विचार को गढ़ने का अवसर दिया है. यह अवसर है, जिसमें किसान आन्दोलन, लोकविद्या दर्शन, "समाजों की कहानी-समाजों की ज़ुबानी" जैसी पहल और स्वराज परम्पराओं के विविध तरीकों को एक साथ संवाद में लाया जा सकता है, और इस दिशा में कार्य के लिए सभी साथ आयें.
3. **विद्या आश्रम के कार्यक्रम :**
   - **लोकविद्या जन आन्दोलन :** इस वर्ष लोकविद्या जन आन्दोलन की दिशा और कार्यक्रमों को तय करने में किसान समाज में फैली चेतना की भूमिका महत्वपूर्ण रही, वही कोविद महामारी ने पहल लेने में कई तरह की बाधाएं भी खड़ी की. फिर भी वाराणसी और पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रमुख जिलों (पूर्वांचल) के सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच सक्रिय संवाद और साथ कार्य करने में पहल ली गई. वाराणसी और पूर्वांचल के जिलों में किसान और कारीगर समाजों के बीच लोकविद्या विचार के प्रसार में सक्रिय पहल ली गई. लक्ष्मण प्रसाद और रामजनम ने इन सभी में भागीदारी की. लोकविद्या जन आन्दोलन का एक परचा प्रकाशित किया गया है, जो संलग्न है. इन सभी में लक्ष्मण प्रसाद, रामजनम और फ़ज़लुर्रहमान अंसारी की भागीदारी रहती है..
   - **लोकविद्या समूह की इन्टरनेट पर वार्तायें :** 25 दिसंबर 2021 से इन्टरनेट पर शुरू हुई यह साप्ताहिक वार्ता अभी तक चल रही है. यह वार्ता हर बुधवार को होती है. इस वार्ता में विस्तार से किसान आन्दोलन से निर्मित परिस्थितियों, कोविड महामारी के आर्थिक-सामाजिक-राजनीतिक पक्ष, अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं का लोकविद्या समाजों पर असर, लोकविद्या समाजों के दुनिया भर में हो रहे संघर्ष और विचार, विधानसभाओं के हुए चुनाव, आदि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं के सन्दर्भ में 'किसान आन्दोलन और भारत का भविष्य' विषय चिंतन और वार्ता का प्रमुख मुद्दा बना. 'स्वायत्तता', 'ज्ञान-आय-रोज़गार' 'न्याय-त्याग-भाईचारा' 'वितरित सत्ता (स्वराज) के मौलिक आधार' आदि पर लेखों को इन वार्ताओं में प्रस्तुत किया गया. इन सभी लेखों का संकलन कर उसे पुस्तकरूप में प्रकाशित करने का तय किया गया. यह वार्ता बंगलुरु से जे.के. सुरेश और नागपुर से गिरीश संयोजित करते हैं. इन सभी वार्ताओं के आडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग इस लिंक्पर उपलब्ध है.
   - **लोकविद्या सत्संग :** लोकविद्या जन आन्दोलन और लोकविद्या समाज के बीच सक्रिय संवाद की कड़ी लोकविद्या सत्संग है. इसमें बनारस के घाटों पर कबीर के पदों के सहारे आम लोगों के साथ लोकविद्या दर्शन संवाद होता है. सितम्बर 2021 से प्रत्येक रविवार को अस्सी घाट (संयोजक युद्धेश) और प्रत्येक गुरूवार को राजघाट (संयोजक गोरखनाथ) पर बैनर और पोस्टर्स लगाकर लोकविद्या सत्संग हो रहा है. इसमें लगातार संशोधन भी हो रहा है, जैसे महीने के आखरी रविवार को अस्सीघाट लोकविद्या सत्संग को किसी गाँव या

अन्य घाट पर भी किया गया है और हर महीने का आखरी गुरूवार राजघाट के लोकविद्या सत्संग में अन्य संतों के पद गाये जाते है और उनके जीवन और सन्देश पर चर्चा होती है. अभी तक रैदास , कीनाराम और काशी 'अनपढ़' के पद गाये गए हैं. सत्संग के दौरान स्थानीय गायक, वादक, विचारक, कलाकार को शामिल करने के प्रयास रहते हैं.
लोकविद्या सत्संग की टीम में श्याम नारायण (गायक और हारमोनियम वादक), युद्धेश बेमिसाल (गायक और ढपली वादक), सरविन्द पटेल (गायक और हारमोनियम वादक) और छोटेलाल राजभर वादक हैं. सामयिक मुद्दों पर लोकविद्या दृष्टिकोण और लोकविद्या दर्शन की व्याख्या लक्ष्मण प्रसाद और हरिश्चंद्र बिंद करते हैं. लोकविद्या सत्संग का एक परचा भी प्रकाशित किया गया है , जो संलग्न है.

- **समाजों की कहानी समाजों की ज़ुबानी :** इस देश और दुनिया में अनगिनत समाज बसते हैं. इन सभी समाजों के पास अपना ज्ञान, दर्शन, कला, संस्कृति, जीवन मूल्य, देवी-देवता, नायक, नायिकाएं होते हैं. प्राय: आधुनिक व्यवस्थाओं के तहत इन विविध समाजों को एक ही सांचे में ढालने का प्रयास किया जाता है, जिससे समाजों की सक्रियता के और ज्ञानगत आधार टूटकर बिखरते जाते हैं. समाजों की कहानी समाजों की ज़ुबानी कार्यक्रम के तहत विविध समाजों के ज्ञानगत आधारों की पहचान का प्रयास है, जो लोकविद्या समाज के ज्ञान के दावे को आकार देने में महत्त्वपूर्ण होगा. इसी सोच के साथ जहाँ-जहाँ लोकविद्या सत्संग हुआ वहां वहां स्थानीय समाजों की एक कहानी को प्रस्तुत किया गया. अभी तक मल्लाह समाज की रानी रासमणि, पासी समाज की उदादेवी, लोध समाज की रानी अवन्ती, यादव समाज के लोरिक भाइयों की कहानी और ब्रिटिश राज में 1810 में वाराणसी में भवन कर के विरोध में हुये विशाल असहयोग आन्दोलन की कहानी सुनाकर चर्चा हुई है. इसके अलावा इस कार्यक्रम के तहत भोजपुरी भाषा क्षेत्र के जिलों की कुछ चुनी हुई जातियों में सघन कार्य की ज़िम्मेदारी ली गई है, जो इस प्रकार से है.
  -युद्धेश बेमिसाल नट और लोक कलाकार
  -लक्ष्मण प्रसाद राजभर और वनवासी समाज
  --रामजनम प्रजापति और विश्वकर्मा
  -- हरिश्चन्द्र बिन्द मल्लाह, बिन्द, केवट, कश्यप आदि
  --फ़ज़लुर्रहमान अंसारी अंसारी समाज और पसमांदा जातियां
  प्रत्येक शनिवार को विद्या आश्रम पर लोकविद्या सत्संग के बाद इस दिशा में हुई प्रगति की लिखित रपट पेश की जाती है.
- **वाराणसी ज्ञान पंचायत :** लगभग चार वर्ष पहले वाराणसी ज्ञान पंचायत को सलारपुर गाँव से आकार दिया गया था. पहला कार्यक्रम शोषित समाज दल के शहीद नेता बाबू जगदेव प्रसाद स्मारक स्थल पर हुआ. उसके बाद कई स्थानों पर छोटी बड़ी ज्ञान पंचायतों का आयोजन किया गया. शुरू से ही विविध सामाजिक संगठनों की भागीदारी के साथ ज्ञान पंचायतों का आयोजन होता रहा है. इस वर्ष वाराणसी ज्ञान पंचायत की एक आयोजन समिति के गठन की पहल ली गई और इस आयोजन समिति का व्हाट्स एप्प समूह बनाकर उस पर राय मशविरा किया जाता है. अस्सी घाट और राजघाट पर वाराणसी ज्ञान पंचायत की आयोजन समिति से तथा एक या दो स्थानीय वक्ताओं को तय किये विषय पर विचार रखने के लिए आमंत्रित किया जाता है. अभी तक दर्शन निषाद, गीता भारती, कृष्ण कुमार, वीरेंद्र साहनी, आकांक्षा आज़ाद, पराग, अमान अख्तर, अरुंधती, को आमंत्रित किया गया है. इन सभी कार्यक्रमों में एहसान अली, फ़ज़लुर्रहम्मान, लक्ष्मण प्रसाद , हरिश्चंद्र या राम जनम विषय के सूत्रधार की भूमिका निभाते हैं . घाट पर उपस्थित लोगों को इन सभी संवादों में शामिल करने के प्रयास होते हैं.
- **कला क्षेत्र में लोकविद्या संवाद :** इंदौर और वाराणसी से कला के क्षेत्र में लोकविद्या वार्ता को आकार देने के प्रयास हो रहे हैं. इंदौर से लोकविद्या मेला और सत सप्ताह के नाम से कार्यक्रमों को आकार देने की कोशिश है. वाराणसी से संत दर्शन को आधार बनाते हुए कला प्रस्तुतियां और कला दर्शन वार्ता के मार्फ़त भविष्य के समाज निर्माण का दिशाबोध करने के प्रयास हैं. वाराणसी के लोककलाकार और कला चिंतकों से संवाद चलने का प्रयास है. इन संवादों में बंगलुरु से ग्राम सेवा संघ के प्रसन्ना जी का सहयोग मिलता रहा है.

- **मीडिया (रिकॉर्डिंग और इन्टरनेट पर अप लोड) :** उपरोक्त सभी कार्यक्रमों-बैठकों के निमंत्रण, उनमें हुए निर्णयों और सूचनाओं को संप्रेषित करने का काम हरिश्चंद्र बिन्द करते हैं. हरिश्चंद्र ही वीडियो रिकॉर्डिंग करते हैं और फोटो लेते हैं तथा इन्हें व्हाट्स एप्प समूह पर और फेसबुक व यू-ट्यूब पर अपलोड करते हैं. वाराणसी ज्ञान पंचायत के नाम से एक फेसबुक पेज बनाया है जहाँ ये लाइव दिखाए जाते हैं. समूह के सभी सदस्य, विशेषकर फ़ज़लुर्रहमान अंसारी इन कार्यों में हरिश्चंद्र की मदद करते हैं.

4. **प्रकाशन :** इस वर्ष दो पुस्तिकाएं प्रकाशित की गई. एक, *लोकविद्या सत्संग* पुस्तिका का दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ और एक लोकविद्या *भाईचारा विद्यालय पुस्तकमाला* के तहत *'राजा का जूता'* कहानी की पुस्तिका की सॉफ्ट प्रति प्रकाशित हुई. दोनों पुस्तिकाओं का उपयोग लोकविद्या सत्संग में होता है. लोकविद्या जन आन्दोलन और लोकविद्या सत्संग के पर्चे प्रकाशित किये गए हैं.
5. **इन्टरनेट पर उपस्थिति :**
   - कारीगर नजरिया के नाम से फेसबुक अकाउंट, जिसमें कारीगर समाज के दृष्टिकोण से सामाजिक विषयों पर चर्चा होती है.
   - सुनील सहस्रबुद्धे के नाम से फेसबुक पर अकाट जिसमे सामाजिक आंदोलनों, लोकविद्या विचार और लोकाविद्या समाज के बारे में लिखा जाता है.
   - लोकविद्या जन आन्दोलन के नाम का फेसबुक पर एक पेज है और पहले से चला आ रहा एक ब्लॉग है.
   - वाराणसी ज्ञान पंचायत के नाम से व्हाट्स एप्प समूह बनाया है और एक फेस बुक पेज है जिस पर कार्यक्रम लाइव प्रसारित किये जाते हैं.
6. **विद्या आश्रम परिसर की व्यवस्थाएं :** विद्या आश्रम परिसर पर सिमित स्तर पर अतिथियों के रहने और भोजन की व्यवस्थायें हैं. आश्रम की वस्तुओं और परिसर के रखरखाव, मरम्मत और देखभाल मु. अलीम और प्रेमलताजी के मार्ग दर्शन में प्रभावती गोंड , अंजू देवी राजभर, कमलेश राजभर और तपेसरा पटेल द्वारा मिलकर किये जाते हैं. समय-समय पर विनोद से सहयोग लिया जाता है.
7. **कार्यकर्त्ता कल्याण कार्यक्रम :** कोविड महामारी से उत्पन्न परिस्थितियों के चलते और बिमारियों में दावा, और बच्चों की शिक्षा पर कार्यकर्ताओं कोआर्थिक सहयोग दिया गया.
8. **विद्या आश्रम न्यास समिति की बैठक और अजेंडा:** इस वर्ष की आश्रम समिति (बोर्ड आफ ट्रस्टीज) की बैठक का अजेंडा और दिन व समय तय किये जायें
9. **अगले वर्ष के कार्यक्रम और संसाधन :** अगले वर्ष के कार्यक्रम और संसाधनों के बारे में विचार और चर्चा.
10. **वित्त के बारे में :** इस वर्ष लगभग दस लाख रूपया खर्च किया गया.
11. **आश्रम में आये अतिथि :** इस वर्ष आश्रम में अतिथियों का आना-जाना बना रहा. किसान समाज के अगुआ कार्यकर्त्ता और विचारक तथा सामाजिक कार्यकर्ता लगातार आते रहे. चंपारण-वाराणसी लोकनीति यात्रा के चलते ओड़िसा के विचारक आये. दीसोम संस्था से, जो लीडरशिप बिल्डिंग कार्यक्रम के तहत लगभग 40 युवाओं का एक बड़ा समूह आया और दिनभर की वार्ता में लोकविद्या दर्शन और लोकविद्या जन आन्दोलन पर चर्चा हुई. यह समूह कई दिन बनारस में रहा और हमारे लोकविद्या सत्संग और किसान ज्ञान पंचायतों में शामिल होता रहा. इसी के बाद बंगलुरु से दिनेश के नेतृत्व में पांच युवाओं का समूह आया और दो पूरे दिन यहाँ चर्चा में शामिल रहा. पुणे से साधना और अनुभव पत्रिकाओं से पत्रकारों का एक समूह आश्रम में लगभग तीन दिन रहा और उन्होंने लोकविद्या जनांदोलन के कार्यकर्ताओं के साक्षात्कार के वीडियो बनाये. बीबीसी संवाददाता ने आश्रम आकर लोकविद्या विचार से 'ज्ञान, आय और रोज़गार' के सवाल पर वार्ता का वीडियो रिकॉर्डिंग किया.
12. **अन्य:**

चित्रा सहस्रबुद्धे
21 फरवरी 2022